भगवद् गीता का ज्ञान – (15)

" प्रकृति-जनित 3 गुण – सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण "

श्रीमद् भगवद् गीता के 14वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि –

- मनुष्य में प्रकृति से उत्पन्न होने वाले गुण 3 प्रकार के होते हैं – सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण। (गीता – 14:5)
- प्रत्येक मनुष्य में ये तीनों गुण होते हैं, उनमें से एक गुण बाकी के दो गुणों को दबाकर बढ़ जाता है, अर्थात उसकी प्रधानता हो जाती है। (गीता – 14:10)
- इस बढ़े हुए गुण के क्या लक्षण प्रकट होते हैं, यह अगले तीन श्लोकों में बताया गया है --

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥१४:११॥

अर्थात - "जिस समय इस देह में तथा अंतःकरण और इन्द्रियों में प्रकाश (चेतनता) और विवेक-शक्ति (अच्छे बुरे की समझ) उत्पन्न होती है, उस समय ऐसा जानना चाहिए कि सत्त्वगुण बढ़ा है।" **(गीता – 14:11)**

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा। रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१४:१२॥

अर्थात - " हे अर्जुन ! रजोगुण के बढ़ने पर लोभ, अनियंत्रित इच्छाएँ और सकाम-कर्म (केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उद्यम) -- ये वृत्तियाँ पैदा होती हैं।" **(गीता – 14:12)**

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥१४:१३॥

अर्थात - "हे कुरु-नन्दन अर्जुन ! तमोगुण के बढ़ने पर अज्ञान का अन्धकार, निष्क्रियता (आवश्यक कार्यों में रुचि का अभाव), प्रमाद और मोह प्रकट होते हैं।" **(गीता – 14:13)**

इस बढ़े हुए गुण का क्या फल होता है और मनुष्य की मरणोपरान्त गति पर क्या असर होता है, इसका वर्णन निम्नलिखित दो श्लोकों में किया गया है –

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्। रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१४:१६॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ॥१४:१८॥

अर्थात - " श्रेष्ठ कर्म का सात्त्विक (सुख एवं ज्ञान) और निर्मल फल होता है, रजोगुण से संपन्न किये गए कर्म का फल दुःख होता है और तामसी प्रवृत्ति में किए गए कर्म का फल अज्ञान और मूर्खता होता है। (इसलिए मरने पर) सत्त्वगुण में स्थित मनुष्य स्वर्ग आदि उच्च लोकों में जाते हैं, रजोगुण में स्थित मनुष्य पुनः पृथ्वी लोक में ही जन्म लेते हैं और निन्दनीय तमोगुण की वृत्ति में स्थित मनुष्य अधोगति को (अर्थात कीट, पशु आदि नीच योनियों को तथा नरकों को) प्राप्त होते हैं।" **(गीता – 14:16, 14:18)**